माणिक राजकुमार

भारतीय कहानी

एक बार भारत के एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था, जो प्रतिदिन मंदिर में देवताओं की पूजा करने के लिए जाता था.

एक दिन जब वो सड़क पर जा रहा था, तो उसने जमीन पर पत्थरों के बीच कुछ चमकता हुआ देखा. वो झुका और उसने देखा कि वो एक चमकीला लाल पत्थर था. वो इतना सुंदर था कि ब्राह्मण ने उसे अपनी जेब में रख लिया. आगे सड़क पर उसे एक भुट्टा बेचने वाला मिला. तवे पर मक्का के भुनने की खुशबू ने ब्राह्मण को याद दिलाया कि उसने पूरे दिन कुछ खाया नहीं था. क्योंकि, उसकी जेब में पैसे नहीं थे इसलिए उसने कुछ मक्के के बदले में, मकई-विक्रेता को वो लाल पत्थर देने की कोशिश की. सौभाग्य से, मक्का-विक्रेता एक ईमानदार आदमी था.

"क्या तुम पागल हो?" वो चिल्लाया. "वो लाल पत्थर एक माणिक है और उसकी कीमत मेरी पूरी दुकान से अधिक है. बेहतर होगा कि तुम उसे राजा को दिखाने के लिए महल में ले जाओ."

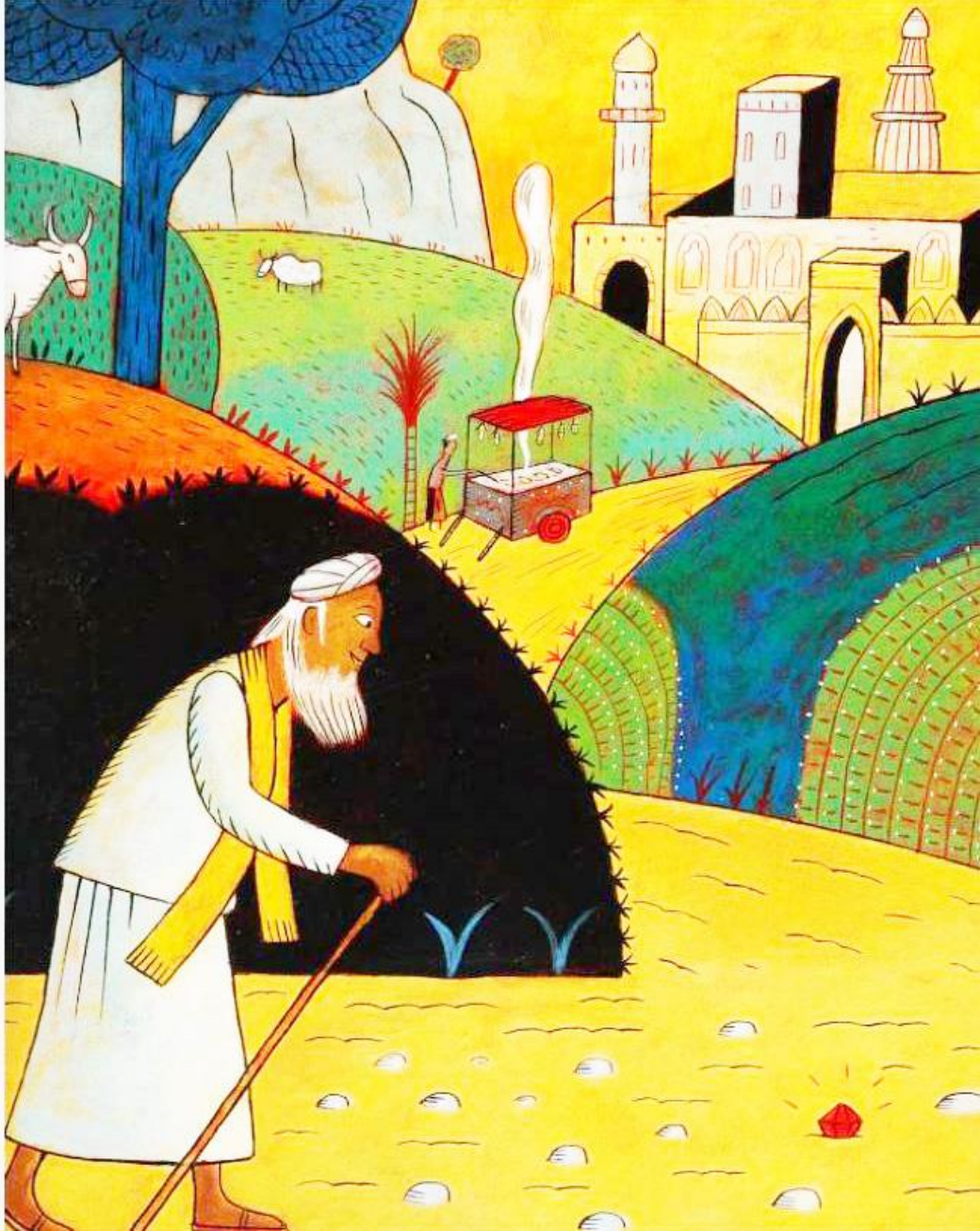

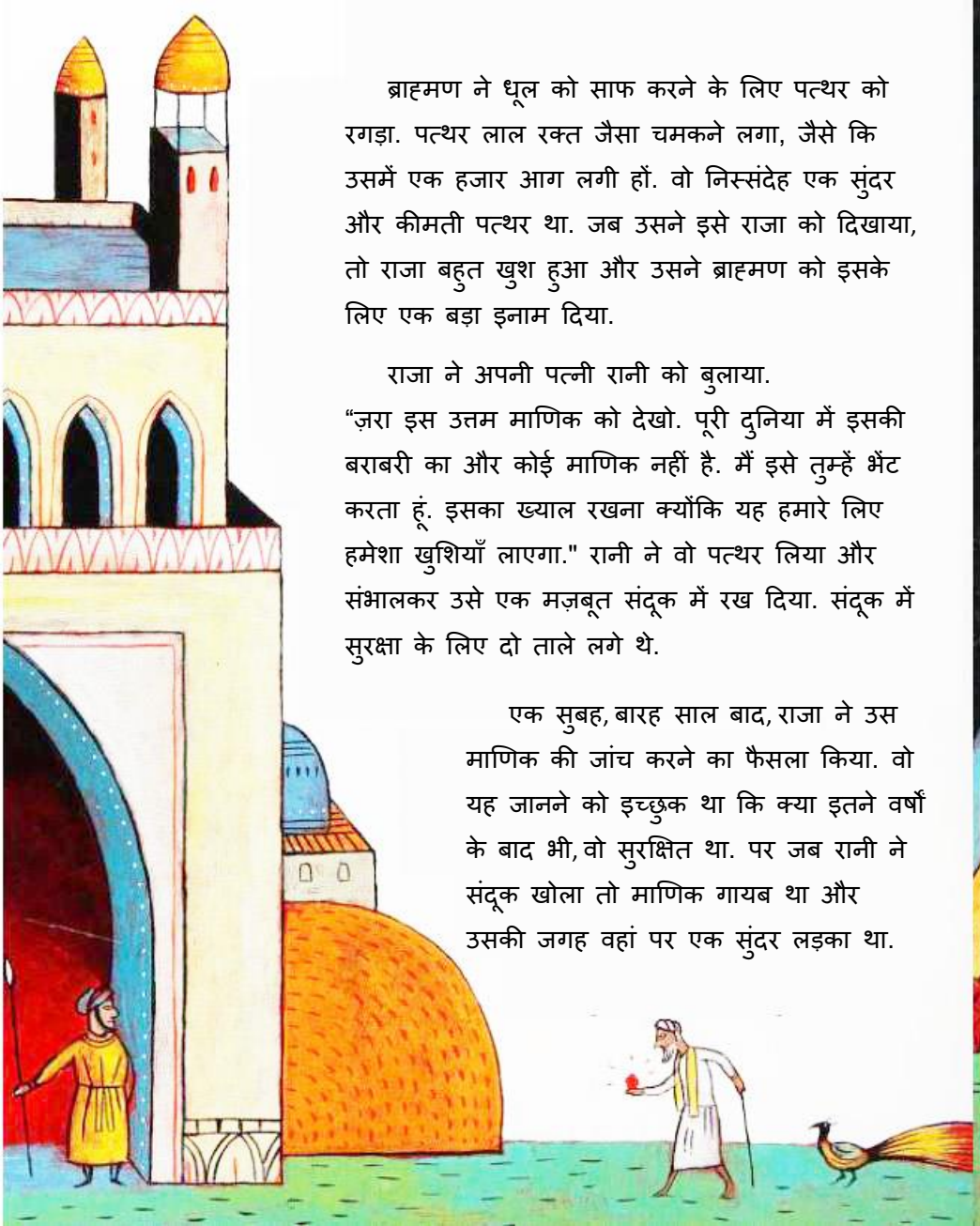

ब्राह्मण ने धूल को साफ करने के लिए पत्थर को रगड़ा. पत्थर लाल रक्त जैसा चमकने लगा, जैसे कि उसमें एक हजार आग लगी हों. वो निस्संदेह एक सुंदर और कीमती पत्थर था. जब उसने इसे राजा को दिखाया, तो राजा बहुत खुश हुआ और उसने ब्राह्मण को इसके लिए एक बड़ा इनाम दिया.

राजा ने अपनी पत्नी रानी को बुलाया.
“ज़रा इस उत्तम माणिक को देखो. पूरी दुनिया में इसकी बराबरी का और कोई माणिक नहीं है. मैं इसे तुम्हें भेंट करता हूं. इसका ख्याल रखना क्योंकि यह हमारे लिए हमेशा खुशियाँ लाएगा." रानी ने वो पत्थर लिया और संभालकर उसे एक मज़बूत संदूक में रख दिया. संदूक में सुरक्षा के लिए दो ताले लगे थे.

एक सुबह, बारह साल बाद, राजा ने उस माणिक की जांच करने का फैसला किया. वो यह जानने को इच्छुक था कि क्या इतने वर्षों के बाद भी, वो सुरक्षित था. पर जब रानी ने संदूक खोला तो माणिक गायब था और उसकी जगह वहां पर एक सुंदर लड़का था.

"तुम कौन हो?" राजा की मांग की. "और तुमने मेरे माणिक का क्या किया?"

"आपका माणिक अब मौजूद नहीं है," लड़के ने कहा. "मैंने उसकी जगह ले ली है. मैं माणिक राजकुमार हूं. मैं आपको नहीं बता सकता कि यह सब कैसे हुआ, क्योंकि वो सब जानना आपके लिए ज़रूरी नहीं है."

राजा एक पल के लिए चुप रहा और लेकिन फिर उसे बहुत गुस्सा आया. "मेरा माणिक चोरी हो गया है और उसकी जगह एक राजकुमार को रख दिया गया है और तुम उसका कोई स्पष्टीकरण भी नहीं दे रहे हो! यह तो बड़ी बदतमीजी है! मेरे महल को तुरंत छोड़ कर चले जाओ!"

क्रोध के बावजूद, राजा एक सभ्य व्यक्ति था और उसने यह सुनिश्चित किया कि लड़के को जाने से पहले उसे एक घोड़ा और तलवार दी जाए. माणिक राजकुमार घोड़े पर चढ़ गया और फिर वो पूरे दिन सवारी करता रहा. अन्त में वह एक नगर के फाटक पर पहुंचा, जहां एक बूढ़ी औरत रो रही थी.

"तुम क्यों रो रही हो, माँ?" राजकुमार ने पूछा.

"मेरे बेटे को आज मरना है," बूढ़ी औरत ने जवाब दिया."

एक विशाल मांस खाने वाला रक्षक हमारे शहर को आतंकित कर रहा है. हर दिन वो खाने के लिए एक युवक की मांग करता है, नहीं तो वो शहर को नष्ट करने की धमकी देता है. आज रात मेरे पुत्र को अपने प्राण त्यागने हैं, और उसके खोने के डर से मेरा मन टूट गया है."

"डरो मत, माँ," माणिक राजकुमार ने उत्तर दिया. "मैं राक्षस को मार डालूंगा और शहर को इस श्राप से मुक्त कर दूंगा. वो राक्षस कहाँ है मुझे उसका अता-पता बताओ."

"उससे कोई फायदा नहीं होगा," बुढ़िया ने कहा. "वो आज तुम्हें मार डालेगा और कल मेरे बेटे को भी."

"मुझ पर विश्वास करो," राजकुमार ने कहा, "मैं राक्षस को ज़रूर मार डालूंगा."

जब रात होने वाली थी, तब राजकुमार उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ आमतौर पर राक्षस दिखाई देता था. राजकुमार ने अपने घोड़े को रास्ते में ही बांध दिया और फिर एक कंबल ओढ़कर वो जमीन पर सो गया.

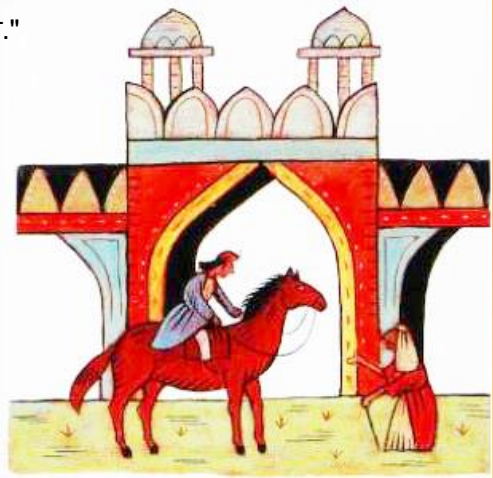

कुछ ही देर बाद हवा में एक बड़ी गर्जना हुई और दानव पास आया. पर राजकुमार ने एक योजना सोची थी, और वो अपने कंबल के नीचे छिपा हुआ था.

राक्षस को कुछ भी दिखाई नहीं दिया और उसे लगा कि आज शहर ने उसके लिए मानव मांस का दैनिक भोजन नहीं छोड़ा था. राक्षस बहुत गुस्से में था और उसने एक शक्तिशाली चीख़ निकाली जिसने पेड़ों की चोटियां हिलने लगीं. उसी समय, राजकुमार ने अपने छिपने के स्थान से छलांग लगाई और अपनी तलवार के एक शक्तिशाली वार से, दानव के सिर को काट दिया.

जब माणिक राजकुमार राक्षस के सिर को उठाकर शहर लौटा, तो वहां उसका एक हीरो जैसे स्वागत हुआ. उसके महान कार्य का समाचार शीघ्र ही राजा के कानों तक पहुँचा. उन्होंने अनुरोध किया कि माणिक राजकुमार अपने साहस के लिए पुरस्कृत होने के लिए महल में पधारें.

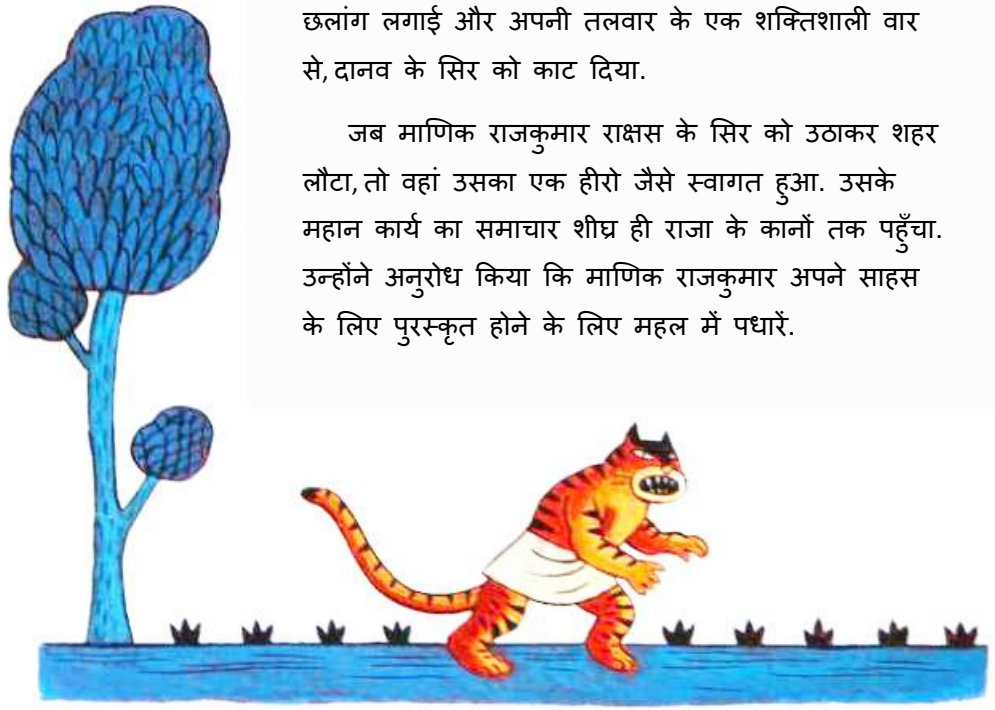

राजा को बहुत आश्चर्य हुआ जब उसे पता चला कि राक्षस को मारने वाला योद्धा वही लड़का था जो उसने संदूक से निकाला था! अपनी कृतज्ञता जताने के लिए, उन्होंने माणिक राजकुमार से अपनी बेटी की शादी की. राज्य में हर कोई इस शादी से रोमांचित हुआ.

युवा राजकुमारी पूरी तरह से माणिक राजकुमार की सुंदरता और उदार स्वभाव से मोहित हो गई थी. वो उससे दिल से प्यार करती थी, फिर भी एक बात उसे लगातार चिंतित करती थी.

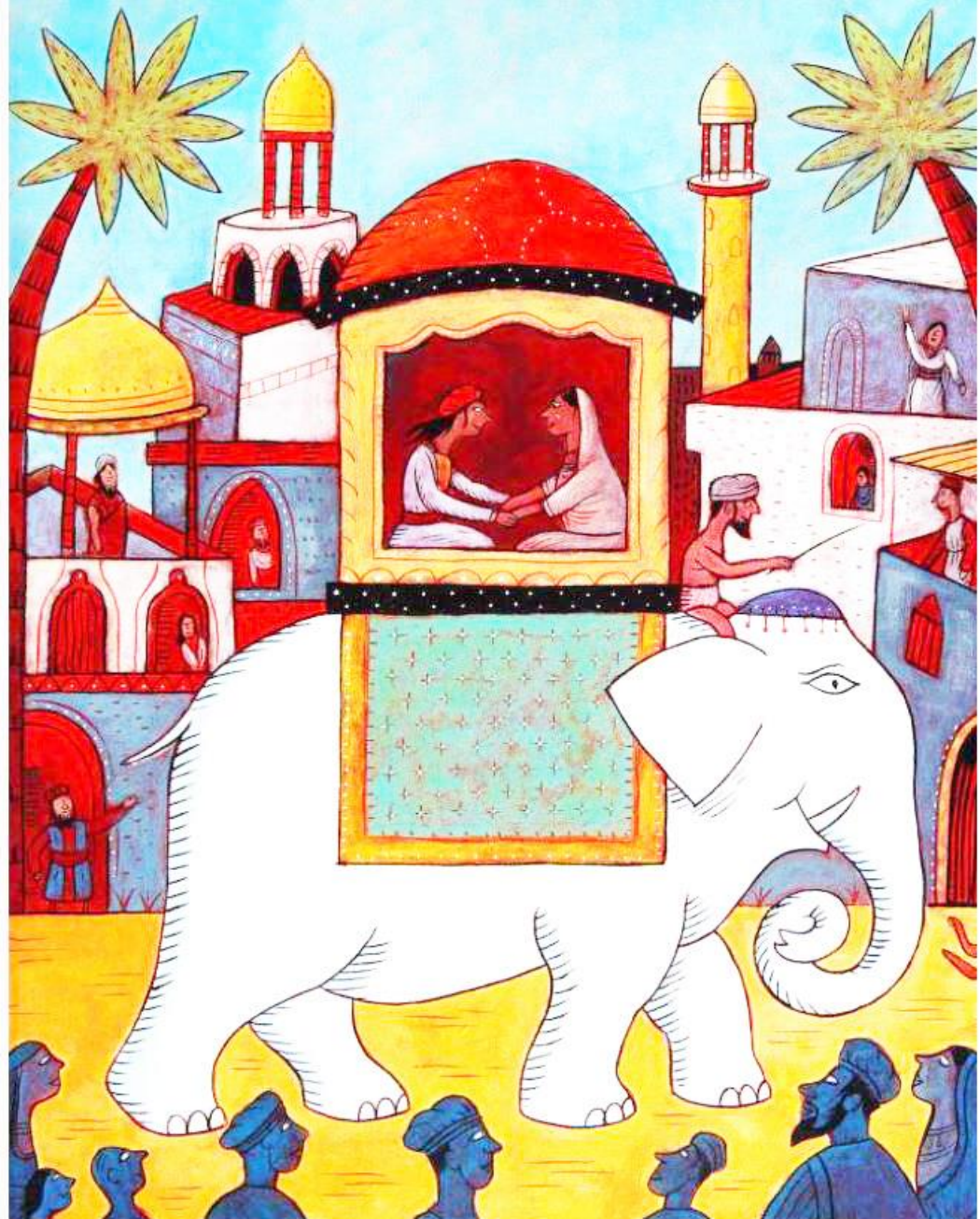

हर किसी की तरह, राजकुमारी भी अपनी पति के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी. कोई भी यह नहीं जानता था कि वो कहां से आया था और उसका परिवार कौन था. राजकुमार का जीवन एक रहस्य में छिपा हुआ था. एक शाम राजकुमारी ने उससे कहा: "मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ, लेकिन मैं तुम्हारे बारे में लगभग कुछ भी नहीं जानती हूँ. कृपया मुझे बताओ कि तुम कौन हो और तुम कहाँ से आए हो."

राजकुमार ने उत्तर दिया, "मेरी प्रिय पत्नी, तुम मुझसे बाकी जो चाहें पूछो, वो मैं तुम्हें बताऊंगा, लेकिन कृपया मुझसे मेरे परिवार के बारे में मत पूछो, क्योंकि वो एक ऐसी बात है जो मैं तुम्हें नहीं बता सकता हूँ."

राजकुमारी ने फिर इस मुद्दे पर और अधिक बात नहीं की. लेकिन हर दिन राजकुमारी की, अपने पति के बारे में उत्सुकता और बढ़ती गई. आखिरकार उसने राजकुमार से फिर पूछा, लेकिन राजकुमार ने उसे फिर से तीखा जवाब दिया: "वो जानने की कोशिश मत करो क्योंकि तुम जब वो जान लोगी तो तुम्हें पछतावा होगा!"

जैसे-जैसे दिन बीतते गए राजकुमारी, राजकुमार के रहस्य को जानने के लिए तड़प उठी. एक दिन बगीचे में एक साथ टहलते हुए, उसने फिर पूछा. "अगर तुम मुझसे सच में प्यार करते हो," राजकुमारी ने कहा, "तो तुम मुझे अपना रहस्य बताओ."

राजकुमार ने मना कर दिया. "तुम जानती हो कि मैं ऐसा नहीं कर सकता," राजकुमार ने जवाब दिया.

"मैं भीख माँगती हूँ. तुम मुझे बताओ," राजकुमारी रोई, उसकी आँखों में आँसू भर आए. दंपति उस नदी पर पहुंचे जो उनके बगीचे के पास से बहती थी. राजकुमार नदी की ओर चल दिया.

राजकुमार ने एक उदास नज़र से पानी को देखा और फिर उसने नदी में छलांग लगाई. "अच्छा अब यह जान लो कि मैं साँपों के राजा का पुत्र हूँ और वो...." और इससे पहले कि राजकुमार अपनी बात को समाप्त कर पाता, उसका सिर पानी के नीचे गायब हो गया था. माणिक राजकुमार के सिर के ऊपर एक सर्प, नदी से बाहर निकला, उसने राजकुमारी को देखा, और उसने फिर से वापस गोता लगाया.

हताश होकर, राजकुमारी, राजकुमार का नाम पुकारते हुए नदी के किनारे ऊपर-नीचे भागी.

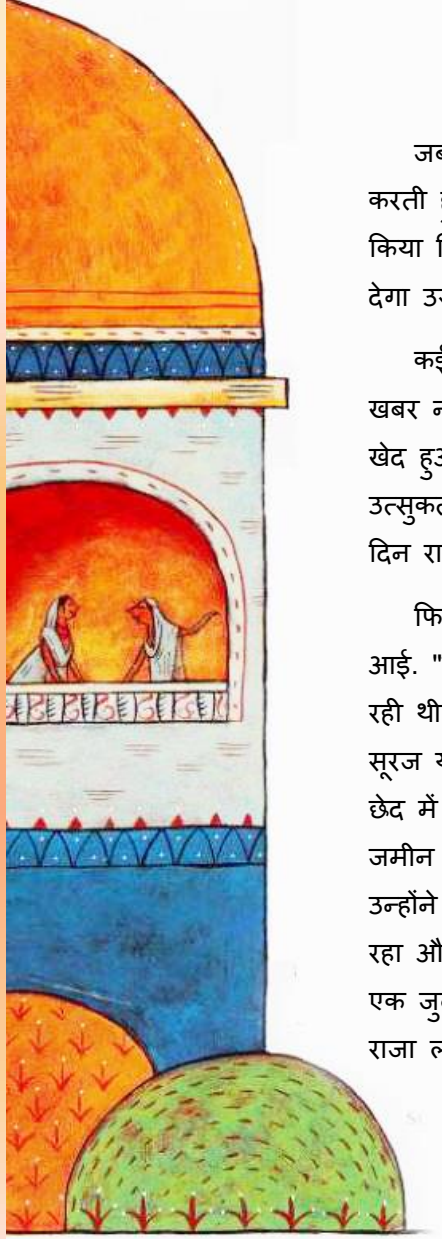

जब राजकुमार प्रकट नहीं हुआ, तो राजकुमारी विलाप करती हुई महल में लौट आई. अगले दिन उसने ऐलान किया कि जो भी उसे माणिक राजकुमार के बारे में सूचना देगा उसे वो एक सोने का थैला देगी.

कई महीने बीत गए लेकिन माणिक राजकुमार की कोई खबर नहीं मिली. राजकुमारी को अपनी अतृप्त जिज्ञासा पर खेद हुआ और उसने रोते हुए अपने दिन बिताए. अपनी उत्सुकता में उसने अपना पति भी खो दिया था. हर गुजरते दिन राजकुमारी कमज़ोर और बीमार होती गई.

फिर एक दिन महल से एक नर्तकी राजकुमारी के पास आई. "पिछली रात," उसने कहा, "जब मैं एक पेड़ के नीचे सो रही थी, तब मैं एक अजीब रोशनी से जाग गई. वो रोशनी सूरज या चंद्रमा से बिल्कुल अलग थी. फिर, एक सांप के छेद में से, कुछ नौकर निकलकर बाहर आए, और उन्होंने जमीन को साफ किया और उसपर पानी छिड़का. फिर उन्होंने उस पर एक शानदार गलीचा बिछाया. संगीत बजता रहा और फिर छेद से चमकते गहने पहने हुए युवकों का एक जुलूस निकला. उनके पीछे एक आदमी था जो उनका राजा लगता था क्योंकि उसके सिर पर एक मुकुट था.

युवकों ने राजा के सामने नृत्य किया. उनमें से एक युवक था जिसके सिर पर चमकदार लाल पत्थर था. उसने भी नृत्य किया, लेकिन वह पीला और कमजोर दिख रहा था. मुझे आपको बस इतना ही बताना था."

अगली रात, राजकुमारी नर्तकी के साथ पेड़ के पास गई यह देखने के लिए कि क्या फिर से वही होगा. फिर एक लंबे इंतजार के बाद अजीब रोशनी चमकी और नौकर दिखाई दिए, उसके बाद नर्तकियों और संगीतकारों का जुलूस निकला.

राजकुमारी का दिल टूटने वाला था जब उसने अपने पति, माणिक राजकुमार को, राजा के सामने नाचते हुए, इतना पीला और कमजोर पाया.

जब नृत्य समाप्त हुआ, तो अजीब रोशनी गायब हो गई और सब लोग भी गायब हो गए. राजकुमारी दुःख से भरी महल में लौट आई. हर रात वह अपने पति की एक झलक पाने के लिए उसी स्थान पर लौटती थी जहाँ वो नृत्य करता था. उसका दिल भारी बना रहा, क्योंकि उसे यह नहीं पता था कि माणिक राजकुमार को वो दुबारा कैसे पाए.

फिर एक दिन नर्तकी राजकुमारी के पास एक विचार लेकर आई. "केवल पुरुष ही राजा के लिए नृत्य करते हैं," उसने कहा. "अगर मैं उनके लिए नृत्य करूँ तो क्या होगा? हो सकता है कि राजा इतने खुश हों कि वो मुझे कोई इनाम दें."

"नहीं," राजकुमारी ने उत्तर दिया. "तुम नहीं, पर मैं उनके लिए नृत्य करूंगी, लेकिन उससे पहले तुम्हें मुझे अपनी कला सिखानी होगी."

नर्तकी ने राजकुमारी को वो सब कुछ सिखाया जो वो जानती थी और जल्द ही राजकुमारी एक बेहतरीन नर्तकी बन गई.

राजकुमारी तैयार हुई. उसने अच्छे रेशमी कपड़े पहने और इतने सारे हीरे पहने कि वो एक तारे की तरह चमक उठी. धड़कते दिल के साथ, वो पेड़ के पास इंतजार करती रही. प्रकाश चमका, नौकर, फिर संगीतकार और फिर राजा प्रकट हुए और नृत्य शुरू हुआ. माणिक राजकुमार पहले से भी अधिक पीला और उदास लग रहा था, और जब वो नृत्य कर रहा था तो वो इतना कमजोर था कि वो मुश्किल से हिल पा रहा था.

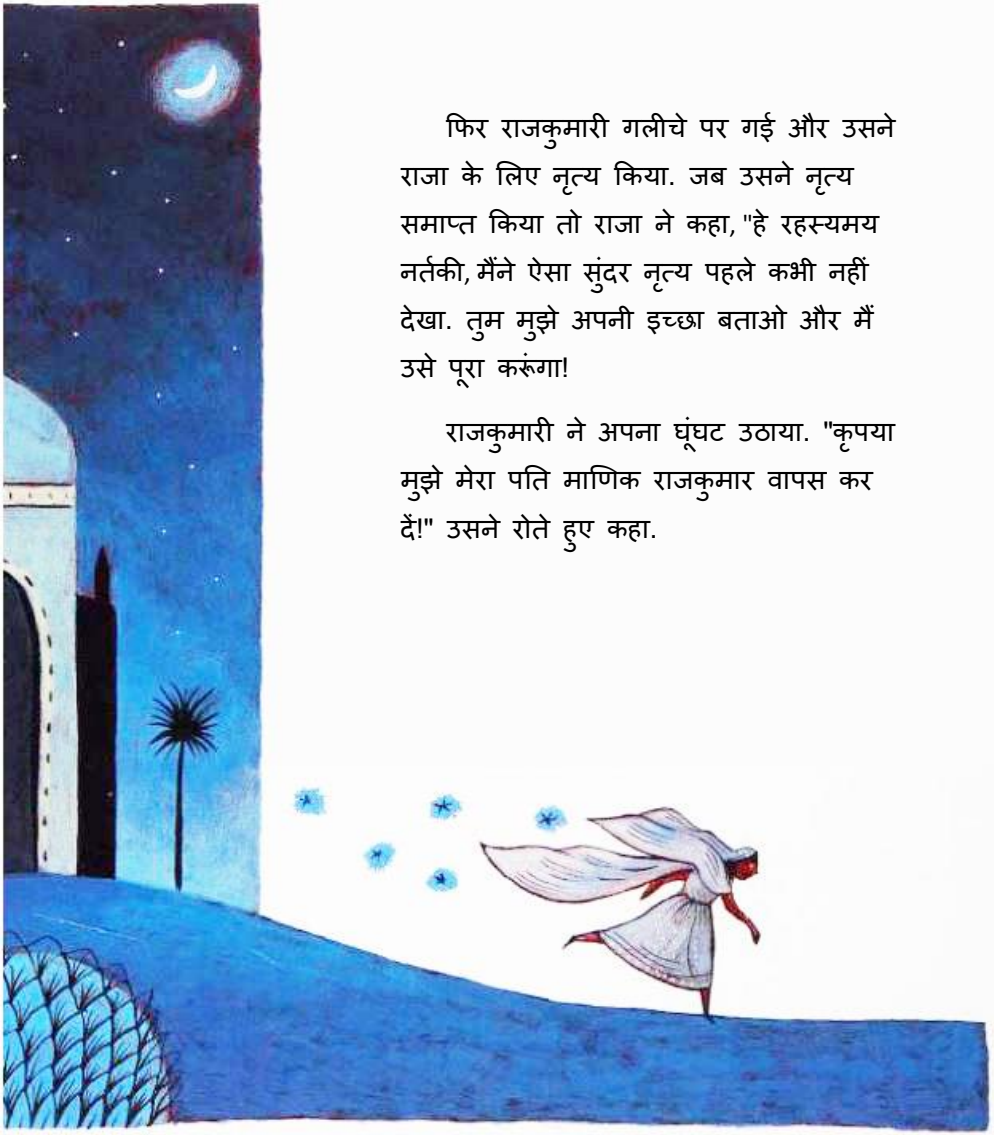

फिर राजकुमारी गलीचे पर गई और उसने राजा के लिए नृत्य किया. जब उसने नृत्य समाप्त किया तो राजा ने कहा, "हे रहस्यमय नर्तकी, मैंने ऐसा सुंदर नृत्य पहले कभी नहीं देखा. तुम मुझे अपनी इच्छा बताओ और मैं उसे पूरा करूंगा!

राजकुमारी ने अपना घूंघट उठाया. "कृपया मुझे मेरा पति माणिक राजकुमार वापस कर दें!" उसने रोते हुए कहा.

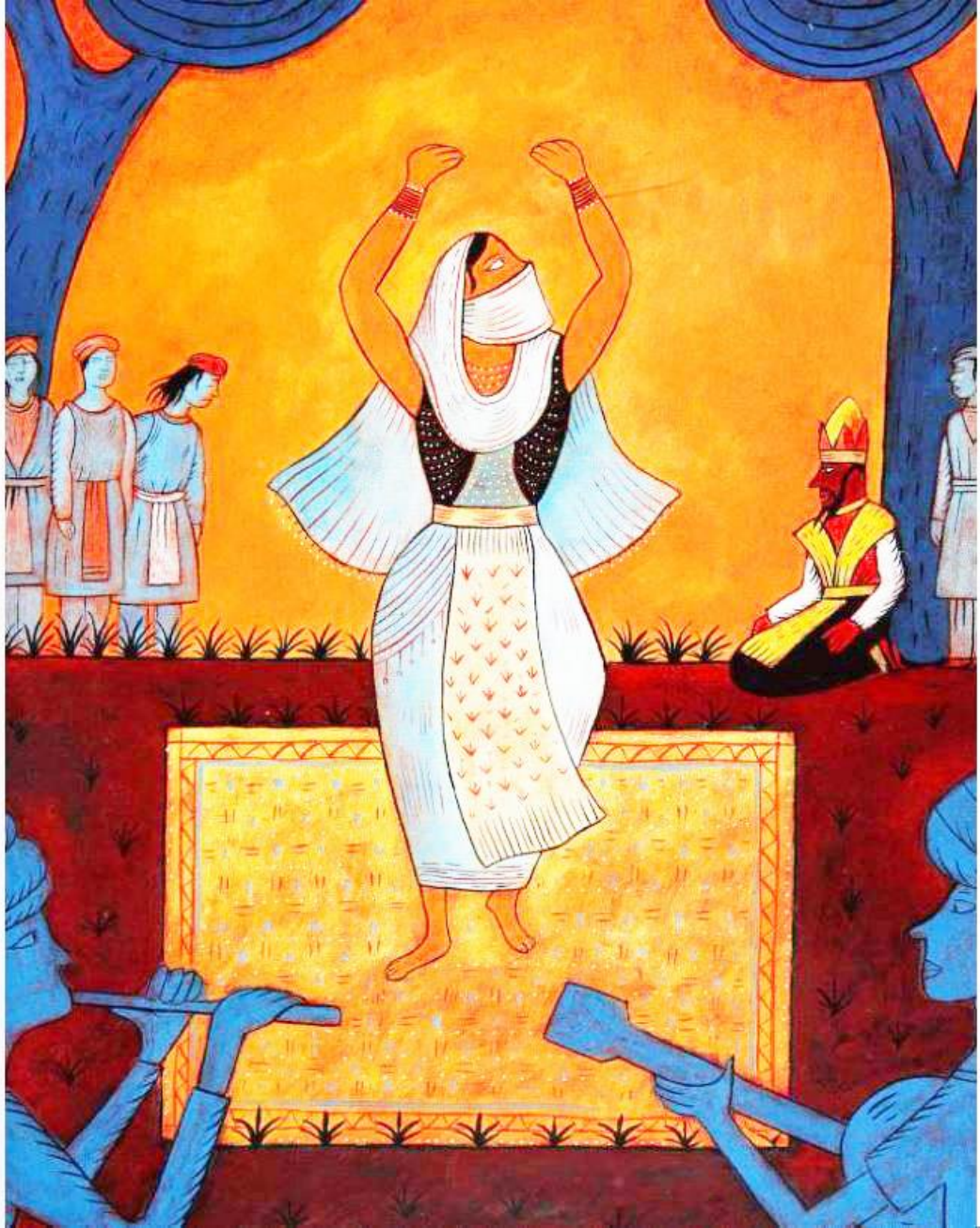

राजा ने उसकी ओर देखा और कहा: "इस तरह की मांग करने के लिए मैं तुम्हें मार डालता. पर क्योंकि मैंने वादा किया है, इसलिए तुम माणिक राजकुमार को ले लो. अब वो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा!"

फिर राजकुमारी, माणिक राजकुमार का हाथ पकड़कर वहां से भाग गई.

राजकुमारी और माणिक राजकुमार ने, एक साथ कई साल, ख़ुशी-खुशी बिताए. राजकुमारी ने फिर कभी अपने पति के उस रहस्य का जिक्र नहीं किया.